1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा न इन्द्र परा वृणक्।

- सामवेद 260

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! हमारा त्याग मत करो।
O Bounteous Lord ! Kindly do not forsake us.

वर्ष 39, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 जुलाई, 2016 से रविवार 10 जुलाई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

Sciecne of Agnihotra or Why should I do Agnihotra as lots of bacteriaget burnt as part of fire leading to killing of organims?

संसार की ज्वलन्त समस्याओं का वैदिक समाधान यज्ञ (अग्निहोत्र, इष्टि, याग)

- आचार्य सनत् कुमार

महानुभावों आज संसार पर्यावरण, स्वास्थ्य, रेडियेशन, खेती, भूकम्प, तूफान, वायरस, मन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तनाव, आत्महत्या आतंकवाद, हिंसा आदि से संबंधित अनेक समस्याओं से पीड़ित है, यदि समस्याएं हैं तो उनका कोई यूनिवर्सल समाधान भी होना चाहिए। आज संसार में 7 अरब से ज्यादा मनुष्य हैं। वे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, बौद्ध, कम्यूनिष्ट वैज्ञानिक आदि समुदायों से बटें हैं। इनमें सबसे ताकतवर समुदाय वैज्ञानिकों का है, जिस पर शायद सब विश्वास करते हैं। क्या इस वैज्ञानिक समुदाय के पास इन सब समस्याओं का समाधान है? तो उत्तर है नहीं। दूसरा, ईसाई, मुस्लिम के जो मूल ग्रन्थ बाइबिल या कुरान में समाधान है इन समस्याओं का? तो उत्तर है नहीं। अन्य कम्यूनिजम आदि में भी कोई समाधान है? तो नहीं है। इन सभी समस्याओं का एक ही समाधान है वह है यूनिवर्सल साइन्स नॉलेज नियम = वेद। उन्हीं वेदों की यूनिवर्सल साइन्स = यज्ञ = अग्निहोत्र = विद्या जिसमें इन सभी समस्याओं का यूनिवर्सल समाधान है।

यज्ञ क्या है? इसकी परिभाषा करते हुए यूनिवर्सल साइन्स विशेषज्ञ महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला नामक ग्रन्थ में कहा कि अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त (23 यज्ञ) वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थ विज्ञान हैं जो जगत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज जी लिखते है कि "आर्यवरशिरोमणि महाशय, ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे लोग बहुतसा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो, तो वैसा ही हो जाय।"

अग्नि में चन्दन, घी आदि पदार्थ डाल के नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं ऐसी मान्यता रखने वाले लोगों को अग्निहोत्र विज्ञान के विषय में महर्षि लिखते है कि जो तुम पदार्थविद्या जानते, तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। भेदकशक्ति होने से अग्नि का सामर्थ्य है कि उस गृहस्थ वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

आधुनिक वैज्ञानिक परीक्षणों से भी यह वार्ता सिद्ध है कि अग्निहोत्र अनेक समस्याओं का समाधान है, 2015 के जून मास में हमने नेशनल इन्वायरमेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (NERI) के माध्यम से आधुनिक मशीनों के साथ रिसर्च किया तो इसमें एंटीकैंसर गुण भी मिले आदि।

अग्निहोत्र विज्ञान द्वारा समस्याओं के समाधान हेतु पदार्थ विज्ञान को समझना अति आवश्यक है। हम मुख्यत ४ प्रकार के द्रव्यों को आहुति में प्रयुक्त करते हैं।

- शेष समाचार पृष्ठ 5 एवं 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

15वाँ आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

समान विचारों से ही दाम्पत्य जीवन सुखी बनता है -धर्मपाल आर्य, सभा प्रधान

जिस परिवार में पति पत्नी और पत्नी पति से प्रसन्न रहती है वहां सौभाग्य सुख एवं समृद्धि निवास करती है। यह तब संभव है जब दोनों के विचार परस्पर मिलते हों वही दम्पत्ति सुखी है। समान विचार वाले युवक व युवती के साथ विवाह ही आर्यो की वैवाहिक विचारधारा है। उक्त विचार 15वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के अवसर पर मुख्य अतिथि धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकट किये। अपने सम्बोधन में उन्होंने महर्षि दयानन्द की वैवाहिक मान्यता को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लॉक नई दिल्ली में आयोजित सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने अपने संदेश में कहा कि मात्र कुछ वर्षों में ही लगातार 15वें परिचय सम्मेलन के आयोजन तक पहुंचना इन परिचय सम्मेलनों की बढ़ती लोकप्रियता का सूचक है। आर्य परिवारों का इन सम्मेलनों के प्रति जबरदस्त उत्साह देखने को मिला है। यह महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित वैवाहिक विचारों के कारण ही संभव है।

इस अवसर पर वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य परिवारों को आपस में जोड़ने एवं एक छत के नीचे रिश्ते देखना एवं दिखाने की यह तो अभी शुरूआत भर है जिसके सार्थक परिणाम आ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि समाज में लड़की देखने एवं दिखाने की जो परम्परा वर्तमान में चल रही है वह एक तरफा है। इसमें लड़की के विचारों का कोई मूल्य नहीं है। किन्हीं कारण से यदि रिश्ता नहीं बन पाता तो भी लड़की को ही दोषी माना जाता है। ये आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन वर्तमान युग की नई पनपती कुप्रथाओं को रोकने का सत्प्रयास है।

सम्मेलन में वीरेन्द्र सरदाना मंत्री आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लॉक ने कहा

- शेष समाचार एवं चित्र पृष्ठ 5 एवं 8 पर

सम्मेलन के कार्यकर्ता, सभा अधिकारियों एवं अतिथियों के साथ प्रतिभागी - युवक-युवतियां।

वेद-स्वाध्याय

उसको जानो

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद् विदुस्त इमे समासते।। ऋ. 1/164/39
ऋषिः - दीर्घतमा।। देवता - विश्वेदेवाः।। छन्दः - भुरिक्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- ऋचः =ऋचाएं, वेदमन्त्र **अक्षरे** =उस अक्षर अविनाशी **परमे व्योमन्** = परम आकाश में आश्रित हैं **यस्मिन्** = जिसमें **विश्वेदेवाः** = सब-के-सब देव **अधिनिषेदुः** = ठहरे हुए हैं। इसलिए **यः** = जो मनुष्य **तत्** = उस अक्षर को **न वेद** = नहीं जानता, वह **ऋचा** = ऋचाएं, वेदमन्त्र पढ़कर **किं करिष्यति** = क्या करेगा और **ये** = जो **तत् विदुः** = उसे जानते हैं, **ते इत् इमे** = वे ही ज्ञानी लोग **समासते** = समासीन होते हैं। स्वस्थ, स्वरूपस्थ, आत्मानन्द में स्थित होते हैं।

विनय- हे मनुष्य! यदि तूने सब ऋचाओं की एक आधारभूत वस्तु को नहीं जाना है तो वेद की ऋचाएँ पढ़कर तू क्या करेगा? उसके जाने बिना वेद पढ़ना निष्फल है, समय खोना है। वेद उसे ही पढ़ने चाहिएं जिसे वेदमन्त्रों के एक प्रतिपाद्य विषय उस अक्षरतत्त्व को जानने की इच्छा है जोकि 'परम व्योम' है, एक परम आकाश है। वह इस प्रसिद्ध आकाश से भी उत्कृष्ट है। वह इतना व्यापक आकाश है कि यह सब विविध ब्रह्माण्ड उसमें ओत-प्रोत है। इसीलिए वह 'परम व्योम' कहाता है। उसे ज्ञानी लोग 'ओं' इस अक्षर से भी पुकारते हैं। वह विविध प्रकार से सबकी रक्षा करने वाला (व्योम), अविनाशी (अक्षर) तत्त्व है। सब देवता, सब संसार, उस एक में समाया हुआ है। प्रत्येक वेदमन्त्र किसी-न-किसी देवता की स्तुति करता है, परन्त ये वेद-प्रतिपाद्य सब-के-सब देवता उस एक ही वेद में ठहरे हुए हैं। इसलिए यदि उस एक देव को जानने की, उसे पाने की इच्छा है, तभी वेदमन्त्रों को पढ़ो। वेदमन्त्रों को इसलिए मत पढ़ो कि उनमें से किन्हीं अपने अभीष्ट विचारों को निकालेंगे या उसके ऐसे अर्थ करेंगे जिनसे कुछ भलाई सिद्ध होगी। वेद का ऐसा पढ़ना तो निष्फल ही नहीं, किन्तु पाप है। हमें वेदमन्त्रां के पास इस पवित्र भाव से पहुंचना चाहिए कि ये हमें उस एक देव के पवित्र चरणों में पहुंचाने के साधन होंगे। प्रत्येक वेदमन्त्र में हमें उस अक्षर प्रभु का प्रतिबिम्ब दिखाई देना चाहिए। इसलिए वे पुरुष जो उस तत्त्व को जानते हैं, और जो यह जानते हैं कि सब ऋचाएं उस अक्षर में हैं, ऐसे ज्ञानी होग समासीन हो जाते हैं। ठीक तरह स्थित हो जाते हैं; और यह अवस्था केवल ऐसे ही ज्ञानी लोगों को प्राप्त होती है। ऐसे ही ज्ञानी लोगों को शान्ति-प्राप्ति होती है, सब संशयों से रहित स्वस्थता और आनन्द की एक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वेदमन्त्रों के ध्यान से वे लोग समाहित (समाधिस्थ) हो जाते हैं, उस अक्षर में लीन होने का परमानन्द पाते हैं। वहाँ ऋचाओं का पढ़ना सफल हो जाता है।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या इसके लिए भी मुसलमान बनना पड़ेगा?

जलती चिता, उठता धुंआ, रोता बिलखता परिवार, फिज़ा में दुःख और विषाद उत्तर प्रदेश के शिकोहाबाद में सेना के शहीद जवान वीर सिंह की अंतिम यात्रा में भारतीय समाज के जातिगत बंटवारे की कहानी कहते नजर आये। भले ही आज प्रधानमंत्री जी कह रहे हों 'मेरा देश बदल रहा है, मेरी सोच बदल रही है' लेकिन कुप्रथाओं का मकड़जाल अभी भी लोगों की मानसिकता से हटता दिखाई नहीं दे रहा है। कुछ दिन पहले तक देश के शहीद जवान के लिए सर्वधर्म गर्व करता था किन्तु आज शहीदों का पहले धर्म और अब शहीद की जाति भी तलाशी जाने लगी है। देश के लिए लड़ते हुए शहीद होने पर हर किसी को फक्र होता है। लेकिन क्या लोगों ने सोचा है कि जिस मातृभूमि के लिए वह दिन-रात जंगलों की खाक छान रहा है। तुम सो जाओ वह जाग रहा है, उसी के शहीद होने पर उसके अपने गांव वाले ही अंतिम संस्कार के लिए जमीन का एक टुकड़ा भी न दे पाएं क्योकि शहीद जवान वीर सिंह नट (निचली जाति) के थे। इसी के चलते ऊंची जाति के दबंगों ने ऐतराज जताया। देश और समाज की गर्दन झुका देने वाली यह शर्मनाक घटना यूपी के ही शिकोहाबाद में घटी है । शहीद की जाति को मुद्दा बनाकर दबंगों ने शमशान घाट पर अंतिम संस्कार नहीं होने दिया। बाद में एसडीएम ने अंतिम संस्कार के लिए 10×10 सरकारी जमीन का टुकड़ा मंजूर किया लेकिन तब तक तो उस शहीद की आत्मा छलनी होकर यही बयान कर रही होगी कि सुना तो यही था कि देश में शहीदों का बड़ा सम्मान है। हाय री जाति! जो तू मरने के बाद भी नहीं जाती। मत कहिएगा अब कि जाति आधारित भेदभाव खत्म हो चुका है। मर जाते है वे देश के लिए लड़ते हुए, तिरंगे में लिपटी जब उसकी लाश आएगी, दुनिया कहेगी, शहीद था ये लोग नाक दबाकर कहेंगे नहीं फलां जाति का था। हाँ यदि शहीद जवान मुस्लिम समुदाय से होता तो शायद उसके लिए राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर जमीन और संवेदना की कोई कमी न रही होती!!

यह बीमारी एक जगह नहीं पूरे देश में व्याप्त है। जैसलमेर जैसे छोटे से शहर में लगभग 47 शमशान घाट हैं जबकि जयपुर में इनकी तादाद 57 है। हर जाति का अपना अंतिम दाह-संस्कार स्थल हैं और उपजातियों ने भी अपने मोक्ष धाम बना लिए हैं लेकिन क्या भूमिहीन एक दलित के लिए जिंदगी का आखरी सफर भी सुखद नहीं होता, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें अंतिम क्रिया के लिए जगह तलाशने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। भारत के सामाजिक ढांचे में इंसानियत का यह विभाजन जन्म के साथ शुरू होता है और मौत के बाद भी शमशान घाट तक इंसान का पीछा करता है। ऐसे एक नहीं देश में अनेकों किस्से हैं। किसी कवि ने कहा है कि बैठे थे जब तो सारे परिंदे थे साथ-साथ, उड़ते ही शाख से कई हिस्सों में बंट गए! भले ही हमने आज अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महाशक्ति होने की बना ली हो, किन्तु देश अभी भी राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर और बीमार सा दिखाई दे रहा है। बीमारी भी ऐसी जिसके कारण हमने कंधार से लेकर ढाका तक गवां दिया। लाहौर से लेकर कश्मीर गवां दिया। इतिहास साक्षी है हम गैरों से जब भी हारे अपनी एक कमजोरी की वजह से हारे। वह कमजोरी रही हमारी जातिवाद नामक बीमारी जो हमारे जेहन में इस कदर बस गयी कि हमने सब कुछ गवां दिया किन्तु न जाने क्यों आज तक इस बीमारी को लिए बैठे हैं। आखिर किसके लिए? बाकी जो बचा है उसे गंवाने के लिए?

परन्तु यह क्या आज शमशान घाट से लेकर नाई की दुकान तक जातिवाद का बोलबाला है। मेरा भारत बदल रहा है , भारत आगे बढ़ रहा है या फिर भारत पुनः जातिवाद के गड्ढे में जा रहा है? आज यह प्रश्न प्रासंगिक हो गया है। हाल ही में मुजफ्फरनगर के भूपखीरी में जातिवाद की सनक का एक मामला सामने आया। यहां रहने वाले दलितो और पिछड़ी जाति के लोगों ने आरोप लगाया है कि उनके बाल नहीं काटे जाते हैं। भूपखीरी में पिछड़ी जाति के लोगों के बाल काटने से यहां के बार्बर शॉप मना कर देते हैं। पीड़ित गांववालों का कहना है ठाकुरों की इन्कार के आगे किसी ने भी आवाज उठाने की हिम्मत नहीं दिखायी। लेकिन अब हम एकजुट हैं और संविधान में भारतीय नागरिक के समानता के अधिकार की मांग करते हैं। गाँव के ठाकुरों ने बार्बर शॉप वाले, बाल काटने वालों को हमारे बाल काटने से मना करने को कहा है। उन्ही के दबाव के चलते हमारे बाल नहीं काटे जाते है। जबकि मुस्लिमों को इन दुकानों पर बाल कटवाने से कोई नहीं रोकता, क्या बाल कटवाने के लिए भी हमें मुसलमान बनना पड़ेगा?

- सम्पादक

बोध कथा

कर्त्तव्य की पुकार

महर्षि के जीवन की एक घटना है। कठिन तप के पश्चात्, घोर अभ्यास के अनन्तर, जब उनके लिए मुक्ति का द्वार खुल गया तो उन्होंने सोचा कि अब इस शरीर को जीवित रखने का कोई लाभ नहीं। गंगोत्तरी के निकट एक चोटी पर वे पहुंचे, इस इच्छा के साथ कि चोटी से कूदकर शरीर को छोड़ देंगे, परन्तु तभी भीतर से आवाज़ आई- 'दयानन्द! यह क्या कर रहे हो? अपने लिए मोक्ष का द्वार खुल गया, इससे तुम्हें शांति मिल गई? नीचे इस जलते हुए संसार को देखो! ये अग्नि की लपटें, ज्वालाओं के समुद्र, क्या इन करोड़ों लोगों पर तुम्हें दया नहीं आती? क्या उनके सम्बन्ध में तुम्हारा कोई कर्त्तव्य नहीं? आगे बढ़ो! इस अग्नि को शान्त करने का प्रयत्न करो!''

तभी एक दूसरी आवाज़ ने कहा-'मैं एक छोटी-सी बूँद इस विशाल ज्वाला को कैसे बुझा पाऊंगी?'

और पहली आवाज़ ने अधिकार के साथ कहा-'यह अग्नि बुझे या न बुझे, तुम्हारा कर्त्तव्य यह है कि इसे बुझाने का यत्न करो। भले ही ऐसा करते हुए राख हो जाओ, परन्तु कर्त्तव्य यही है।'

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

कहीं ये इस्लाम की आड़ में साम्राज्यवाद तो नहीं ?

यूरोप का विघटन शुरू हो गया। यूरोपीय संघ से ब्रिटेन के बाहर जाने के बाद जनमत संग्रह कराकर लन्दन को भी अलग देश बनाकर पाकिस्तानी मूल के सादिक खान को राष्ट्रपति बनाने की मांग जोर शोर से उठने लगी है। ब्रिटेन का यूरोपीय संघ से बाहर आना इसकी शुरुआत का हिस्सा भर है, अभी तो नीदरलैंड्, आयरलैण्ड व अन्य कई देश इससे बाहर आने को आतुर होंगे। सब जानते हैं कि पिछली एक शताब्दी में यूरोपियन समुदाय की दौलत जितनी तेजी से बढ़ी है उतनी ही तेजी से विश्व की मुस्लिम जनसंख्या भी बढ़ी है। सन् 1900 में जहाँ मुस्लिम समुदाय विश्व की जनसंख्या का साढ़े बारह प्रतिशत था, आज वहीं उनकी संख्या पचीस प्रतिशत से भी अधिक है। यूरोप जितना भौतिक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा उतना ही इस्लामिक समुदाय अपनी जनसँख्या के कारण एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरकर आया। एक फ्रैन्च विश्लेषक का अनुमान है कि आने वाले वर्षो में यूरोप के देशों में स्वदेशियों की नई पीढ़ी और अप्रवासी मुस्लिमों की पीढ़ी में सड़कों पर आमने-सामने का संघर्ष होगा। यदि वर्तमान स्थिति यही रही तो समस्त देश 2050 तक इसी रास्ते पर चले जायेंगे।

हो सकता है इस त्रासदी का अंदाजा अमेरिका को हो तभी उसने ब्रिटेन से यूरोपीय संघ (ईयू) में बने रहने की अपील की है। कुछ विश्लेषकों की राय माने तो अमरीका का मानना है यदि ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर निकलेगा तो उसके पश्चिम में कमजोर होने की आशंका उत्पन्न हो जाएगी। ब्रिटेन के संघ में बने रहने से आतंकवाद, आव्रजन और आर्थिक संकट जैसी चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटा जा सकेगा। आखिर एकाएक यूरोपीय संघ पर टूटने का खतरा क्यों मंडराने लगा है। इसका मुख्य कारण मुस्लिम शरणार्थी संकट माना जा रहा है? शरणार्थियों के प्रवेश ने मंदी से जूझ रहे यूरोपीय देशों, ग्रीस, तुर्की, जर्मनी, साइप्रस, इटली और स्पेन पर न सिर्फ आर्थिक संकट पैदा कर दिया है बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सामुदायिकता से संबंधित समस्याएं सिर उठाने लगी हैं। लगातार आ रहे शरणार्थियों के बीच आतंकवादियों के छिपकर प्रवेश करने का खतरा बढ़ गया है। सवाल है संघ के सदस्य देशों में यह नाराजगी क्यों पैदा हुई? इसकी वजह यह रही कि जर्मनी सहित अनेक यूरोपीय देशों में शरणार्थियों के प्रति नरम रुख अपना लिया गया और उनकी संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी होने लगी। फिर उसे संभालना मुश्किल हो गया। इससे इन देशों में कई समस्याएं उत्पन्न हो गईं। पिछले साल यूरोपीय संघ की बैठक में 1,60,000 शरणार्थियों को सदस्य देशों के बीच बांटे जाने के मुद्दे पर बात हुई थी। तब इस समस्या के जटिल होने की चेतावनी दी गई थी। शरणार्थियों की बाढ़ आने से स्थानीय निवासियों ने शिकायत की थी कि इससे अपराध में बढ़ोत्तरी, आम उपयोग की वस्तुओं की कीमत में उछाल जैसी समस्याएं आ रही हैं। इस बीच स्वीडन,ब्रिटेन,जर्मनी आदि देशों में शरणार्थियों द्वारा हमला करने, रेप करने जैसी खबरें भी आई, फिर इन्हें रोकने के लिए सुरक्षा बल तैनात किए गए। स्थानीय स्तर पर लोगों में उनके प्रति घृणा और हिंसा की भावना देखी गई। यदि लगातार गंभीर हो रही इस समस्या का समय रहते, आपसी समझदारी से समाधान नहीं निकाला गया तो अन्य देश भी इसकी सदस्यता छोड़ सकते हैं।

कुल मिलाकर देखा जाये तो यूरोपीय संघ आज टूटने के कगार पर है क्योंकि अब कई और देश भी इससे बाहर जाने का रास्ता तलाश करने लगे हैं जिसका सबसे बड़ा कारण यूरोप में बढती मुस्लिम आबादी के रूप में देखा जा रहा है। अपने जन्म से ही इस्लाम ने जो भाषा प्रचलित की, उसने मानव जाति को दो वर्गों में बांट दिया। इस्लाम को मानने वाले मुसलिम, न मानने वाले काफिर। इस्लाम द्वारा शासित क्षेत्र दारूल इस्लाम और उससे बाहर का दारूल हर्ब बना दिया गया। और अपनी सोच और संस्कृति को ही पवित्र मान लिया गया। शायद पूरा विश्व अभी अपनी मूर्छा से नहीं निकला और उसके बौद्धिक जगत में इस्लाम के पिछले डेढ़ हजार वर्ष के इतिहास को ठीक से समझने और उससे सीख लेने की आकांक्षा नहीं जगी वरना एक सरसरी दृष्टि डाल कर भी यह देखा जा सकता है कि इस्लाम को मानने वालों का राजनीतिक-मजहबी विस्तार कितनी बड़ी चुनौती है। पिछले चौदह सौ वर्षों के इतिहास के पन्नों से यदि धूल हटे तो देखें आपसी संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता और साम्राज्यवाद का इतिहास रहा है, जिसकी आंच में भारत को भी एक हजार वर्षो तक झुलसना पड़ा है।

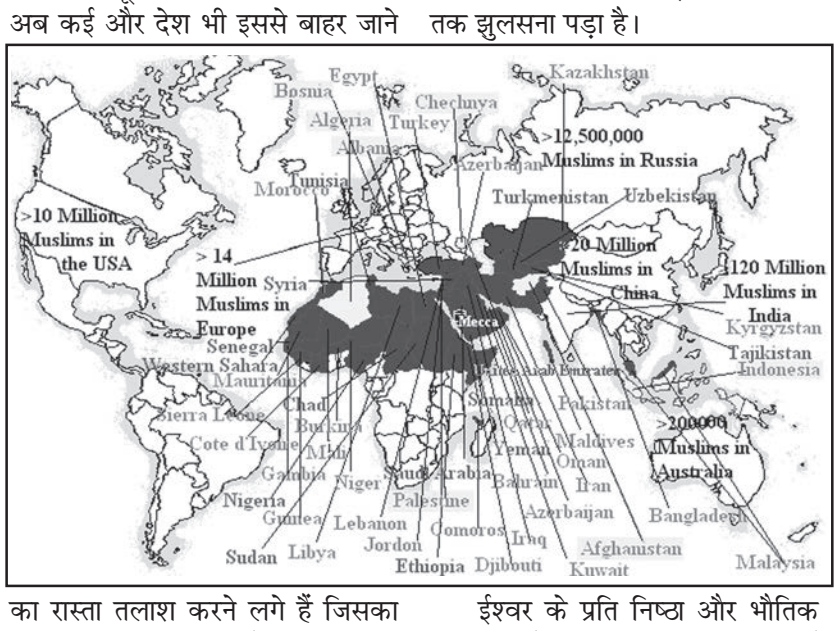

ईश्वर के प्रति निष्ठा और भौतिक जीवन के संचालन को अलग-अलग खानों में रख कर यूरोपीय जाति ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास करके अपूर्व सामरिक और भौतिक शक्ति अर्जित की है जबकि उनके पड़ोस में रहने वाले मुसलिम समुदाय के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं रहा है क्योंकि इस्लाम में अल्लाह के प्रति संपूर्ण निष्ठा ही सब कुछ है। उसका एक बड़ा हिस्सा भौतिकवाद के हमेशा खिलाफ रहा है इसलिए इस्लाम यूरोप की शक्ति को ललकारने की प्रेरणा बना हुआ है। हाल के वर्षो में इस्लाम की कट्टरता यूरोप में एक बड़ा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक प्रश्न बन गया है। कई यूरोपीय देशों में इस्लाम की प्रथाओं के खिलाफ कानून बनाये गये; ऐसा इसलिए हुआ कि यूरोप में मजहबी संस्कृति के नाम पर कानून-संविधान का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन कर राजनीतिक ताकत बढ़ाने का खेल-खेला जा रहा है। किन्तु जैसे ही उदार समाज व्यवस्था पर इस्लाम ने अपनी मजहबी संस्कृतियां हावी की और अलग कानून-संविधान कोड की मांग शुरू की वैसे ही यूरोप की समाज व्यवस्था ने मजहबी संस्कृतियों के प्रचार-प्रसार के खिलाफ सक्रियता भी दिखानी शुरू की है। फ्रांस में बुर्का के खिलाफ संवैधानिक प्रतिबंध इसकी सबसे बड़ी कड़ी है। हालाँकि पहले तो इन मजहबी प्रथाओं को इस्लाम से जुड़ी संस्थाएं मजबूत कर रहीं थीं और अब मीडिया भी इसमें शामिल हो गया। इस्लामिक मूल्यों और रूढ़ियों के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक मीडिया यूरोप में खड़े हैं जो इस्लाम और गैर इस्लामिक आबादी के बीच टकराहट व घृणा का बाजार लगा रहे हैं। मीडिया के ऊपर मजहबी संहिताएं हावी होना न सिर्फ यूरोप में इस्लामिक कट्टरता को बढ़ाने वाला और औरत की आजादी को प्रभावित करने जैसी चिंताओं को शुरू करने वाला हो गया है। आज यूरोप का भविष्य केवल इसके निवासियों के लिये ही महत्त्वपूर्ण नहीं है। वरन् हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अभी तक जो यूरोप पूरे विश्व को निरपेक्ष मार्ग की ओर घसीट रहा था वह अब खुद साम्प्रदायिकता की आग में जलता दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे इस्लाम साम्राज्यवाद की ओर बढ़ रहा है तो सोचो यूरोप के बाद किसका नम्बर होगा?

-राजीव चौधरी

दिल्ली में आयोजित इंटरफेथ सम्मेल्लन में आर्यसमाज

स्वामी दयानन्द द्वारा 1877 में दिल्ली दरबार के समय भारत के प्रमुख धर्म प्रचारकों एवं विद्वानों को बुलाकर सर्वधर्म सम्मेल्लन करना इतिहास में एक विशेष कदम था। स्वामी जी का उद्देश्य सभी मत-मतान्तरों में जो एक समान विचार पाए जाते हैं उन पर एक मत होना था। जिससे मत-मतान्तर के धार्मिक मतभेद समाप्त हो जायें एवं आपसी मधुर सम्बन्ध स्थापित हों। कालांतर में अनेक आर्य विद्वानों ने इस परम्परा का निर्वाहन किया। सीओल, कोरिया की एक संस्था HWPL द्वारा ऐसा ही एक Interfaith dialogue का आयोजन दिल्ली में दिनांक 11 जून, 2016 को किया गया। इस कार्यकर्म में आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रूप में मुझे जाने का अवसर मिला। कार्यकर्म का विषय था विभिन्न धर्मों में जीवन और मृत्यु पर दर्शन एवं विचार। मेरे अतिरिक्त इस्लाम, ईसाई मत, बुद्ध मत के प्रचारक इस कार्यकर्म में शामिल हुए। मेरे भाषण के कुछ अंश -

आर्यसमाज के वैदिक दर्शन में जीवन मृत्यु को लेकर जितना स्पष्ट दर्शन है उतना किसी भी अन्य मत-मतान्तर के दर्शन में स्पष्टता नहीं मिलती। वेदोक्त कर्मफल की मान्यता वैदिक दर्शन का अभिन्न अंग है। पंडित राम चन्द्र देहलवी जी पुनर्जन्म को लेकर दिया गया प्रसिद्ध तर्क कि 'आपका जन्म आपकी इच्छा से हुआ है अथवा अनिच्छा से।' अगर इच्छा से हुआ है तो हर कोई टाटा, बिरला जैसे सेठ के घर क्यों पैदा नहीं होता। किसी निर्धन के घर पर क्यों पैदा होता है, जहाँ खाने के लिए दाने तक नहीं होते और अगर अनिच्छा से हुआ है तो ईश्वर पक्षपाती सिद्ध हुआ जो एक को धनी के और दूसरे को निर्धन के घर पर जन्म दे। ईश्वर का पक्षपाती होना संभव नहीं है। इसलिए पूर्व में किये हुए कर्मों के अनुसार अगला जन्म निर्धारित होना युक्ति संगत, व्यावहारिक एवं वैदिक सत्य है।

अगर सभी धर्म (मत) एक ही ईश्वर तक पहुँचाने का मार्ग हैं तो धर्म के नाम पर मतभेद, लड़ाई, झगड़ा क्यों है? इस शंका का उत्तर धर्म और मत में भेद को अगर संसार समझ जाये तो संसार में धर्म के नाम पर सभी विवाद समाप्त हो जायें। धर्म ईश्वर द्वारा बताया गया मार्ग है। मत मानव कल्पना है। धर्म कर्म प्रधान है। मत मान्यता प्रधान है। धर्म सत्य पर आधारित है। मत विश्वास पर आधारित है। धर्म संसार के सभी प्राणियों से प्रेम करना सिखाता है। मत संसार में केवल स्वमत से प्रेम करना सिखाता है। सभी धर्म एक होते तो उनमें मतभेद नहीं होते। एक मुस्लिम के लिए ईद के अवसर पर बकरा हलाल करना धर्म है जबकि एक जैन के लिए सर की जूं को मारना भी महापाप है। इसलिए अभी धर्म एक ईश्वर का मार्ग बताने में असक्षम है। केवल वैदिक धर्म समूर्ण विश्व के सभी प्राणियों से प्रेम करना सिखाता है।

स्वर्ग कोई विशेष स्थान उन्हीं अपितु इस पृथ्वी पर जो भी मनुष्य सुखी हैं स्वर्ग में है। दुखी हैं तो नर्क में है। इसलिए सुख प्राप्ति के लिए सभी मनुष्यों को उत्तम कर्म करना चाहिए जिससे सुख की अधिकाधिक वृद्धि हो। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना से मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करने की योग्यता प्राप्त करता है। योग के निरन्तर अभ्यास से मोक्ष को सिद्ध कर चिरकाल के लिए आनंद में वास करता है।

अंत में स्वामी दयानन्द के सन्देश-सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य के त्याग के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए से मैंने अपने वक्तव्य को समाप्त किया। मेरे वक्तव्य को ईसाई एवं बुद्ध मित्र ने अत्यधिक पसंद किया। इस कार्यकर्म के

- शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा उत्तरी दिल्ली एवं पूवी दिल्ली आर्य विद्यालयों की कार्यशालाएं सम्पन्न

शिक्षक मानव जीवन के निर्माण का कार्य करता है – डॉ. महेश विद्यालंकार

वैदिक शिक्षा ही मनुर्भव अर्थात् मानव बनने की शिक्षा देती है – सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता

महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को उसकी पहचान दिलाई–प्रतिभा 'महेश'

ईश्वर सर्वव्यापक एवं न्यायकारी है, मानव को उसके कर्मों का फल अवश्य ही मिलता है –विनय आर्य

28 जून 2016 को बिड़ला आर्य गर्ल्स सी. सै. स्कूल में उत्तरी दिल्ली क्षेत्र के अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस अवसर पर इस विद्यालय के मैनेजर श्री योगेश आर्य, प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता खुराना, शादीखामपुर स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती नीरज मेंहदीरत्ता, लाली बाई स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती शशि बरगा एवं आर्य वीर मॉडल स्कूल, बादली की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिल मनचन्दा, दाउदयाल स्कूल नया बांस, आर्य कन्या स्कूल चावड़ी बाजार, की लगभग 110 शिक्षक/शिक्षिकाओं ने भाग लिया। श्रीमती वीना आर्या एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा जी भी उपस्थित थीं।

29 जून 2016 को पूर्वी दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों ने दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार में भाग लिया। इस अवसर पर विद्यालय के मैनेजर श्री प्रवीण भाटिया, प्रधानाचार्या श्रीमती सीमा भाटिया, रतन देवी स्कूल प्राईमरी विभाग की प्रधानाचार्या श्रीमती सरला गंभीर, श्रीमती शशि कथूरिया, ललिता प्रसाद स्कूल, आर्य पब्लिक स्कूल प्रीत विहार के प्रतिनिधि एवं श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता शर्मा उपस्थित थीं। इस विद्यालय में विभिन्न स्कूलों से लगभग 60–70 अध्यापक/अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

श्री विनय आर्य जी ने कहा ''ईश्वर एक है वह सर्वव्यापक व न्यायकारी है। वह हर जगह, हर स्थान से हमें देखता है। अगर कोई यह मान ले कि ईश्वर हमें देख रहा है तो कोई भी मनुष्य गलत काम नहीं करेगा। ईश्वर हमें कर्मानुसार अवश्य फल देता है।''

डॉ. महेश विद्यालंकर जी ने अध्यापक वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा 'आज हम इस वर्कशॉप में आए हैं, कुछ सीखने के लिए क्योंकि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। मानव को ईश्वर ने समस्त योनियों में सबसे ऊँची पदवी दी है। सेमिनार का उद्देश्य है आत्मचिंतन, आत्म–मंथन। क्या खोया? क्या पाया? चिंता नहीं चिंतन करो। विचार से ही मानव बनता है, विचार से ही बिगड़ता है। शिक्षक मानव कल्याण का व राष्ट्र कल्याण का कार्य करते हैं। उन्होंने सभी उपस्थित शिक्षकों एवं विद्यालय परिवार के सदस्यों को अंधविश्वास एवं पाखंडों का विरोध करने की शपथ दिलाई।

आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता एवं महान शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र रैली जी ने कार्यशाला का प्रारम्भ नमस्ते जी एवं गायत्री मंत्र के साथ किया। उन्होंने कहा ब्रह्ममुहूर्त का अर्थ है ईश्वर को याद करना। ब्रह्म अर्थात् ईश्वर इसलिए ईश्वर को स्मरण करके कोई भी शुभ कार्य आरम्भ करना चाहिए। वही ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है। ओम् ईश्वर का निज नाम है। अ अकार, अर्थात् ईश्वर ने हमें जीवन दिया, उ उकार, वही हमारे जीवन को चला रहा है, म मकार अर्थात् अन्त में वही इसे वापस ले लेगा। इसी को आधार बनाते हुए रैली जी ने 'ओम नाम ओम नाम सबसे प्यारा है। सब प्राणियों के जीवन का इक यही सहारा है।' भजन के माध्यम से ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को दर्शाया। रैली जी ने यह भी बताया कि 'अगर हम क्लास में सबसे कमजोर बच्चे की तरफ ध्यान देंगे तो पूरी क्लास का विकास होगा।' श्री सुरेन्द्र रैली जी ने अपने सम्बोधन में यह भी बताया कि हमें समस्या को समस्या न मानते हुए उसे चुनौती मानना चाहिए अर्थात् हमें समस्या का समाधान स्वयं ही ढूंढ कर आगे की ओर अग्रसर होना चाहिए।

उत्तरी दिल्ली के आर्य विद्यालयों की कार्यशाला में उपस्थित अध्यापिकाएं एवं सम्बोधन देते डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री सुरेन्द्र रैली, श्रीमती प्रतिभा।

पूर्वी दिल्ली के आर्य विद्यालयों की कार्यशाला को सम्बोधित करते श्री विनय आर्य जी, मंचस्थ श्री प्रवीण भाटिया, श्री सागर जी, विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा भाटिया, श्रीमती वीणा आर्या एवं कार्यशाला में उपस्थित विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं।

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

चित्रकला :12 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल कनॉट प्लेस
नई दिल्ली–110001

आशुभाषण : 20 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमजा शादीपुर
खामपुर, नई दिल्ली–110008

मंत्रोच्चारण : 28 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज प्रीत विहार, दिल्ली–92

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगितों में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें।– ***प्रस्तौता***

पृष्ठ 3 का शेष

आयोजक ईसाई बंधु ने एक बहुत प्रेरणादायक बात कही। मैं पिछले दो महीनों में सीओल से आने के बाद अनेक हिन्दू मंदिर में गया। मगर किसी ने कोई प्रतिनिधि नहीं भेजा। मगर जब मैं हनुमान रोड आर्यसमाज में विनय आर्य जी से मिला तो उन्होंने तत्काल डॉ.

विवेक आर्य से संपर्क कर इस कार्यक्रम में आने के लिए प्रेरित किया। हिन्दू समाज का अपने सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार में बेरुखी जग विदित है। यही उनके पिछड़ेपन का कारण भी है।

इस कार्यक्रम से यह निष्कर्ष निकला कि आर्यसमाज के सभी प्रतिनिधियों को ऐसे मंच से अपनी बात प्रभावशाली रूप से रखनी चाहिए। नवम्बर महीने में विश्व स्तर पर होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन के लिए मुझे आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रूप में न्योता भी दिया गया। मेरे साथ मनीष आर्य, प्रीतेश आर्य एवं अमित आर्य मेरे अभिन्न मित्र भी कार्यक्रम में शामिल हुए। – ***डॉ. विवेक आर्य***

प्रथम पृष्ठ का शेष

1. सुगन्धयुक्त – केसरादि।
2. मिष्टगुण युक्त खाण्ड, मधु आदि।
3. पुष्टिकारक घृत, दुग्ध दधि अन्नादि।
4. रोग व विषाणु नाशक सोमलता, अपामार्ग, गिलोय आदि।

इन 4 प्रकार के द्रव्यों को संस्कृत करके युक्तिपूर्वक ऋतु व काल अनुसार जो अग्निहोत्र किया जाता है वह अग्नि जल, वायु, आकाश व पृथिवी को शुद्ध करके इन्हे पवित्र बना देता है ये सभी पदार्थ हमारे शरीर में भी हैं इसलिए शरीर व मन बुद्धि आदि से भी शुद्ध होकर पवित्र बनते हैं जो व्यक्ति के महान् बनने हेतु आवश्यक है।

वायु आदि पँचतत्वों को शुद्ध करने के लिए न तो आधुनिक वैज्ञानिक के पास विद्या है, न ही किसी अन्य समुदाय के पास। केवल यह विद्या यूनिवर्सल साइन्स अर्थात् वेदों में है। क्योंकि वेद ईश्वरीय वाणी है। ईश्वर ने इन सभी पदार्थों की रचना की है। तो ईश्वर ने इनकों ठीक रखने के उपाय भी वेदों में बताए हैं। वेदों के विज्ञान योग व आयुर्वेद आज के वैज्ञानिक परीक्षणों से सत्यापित है। यज्ञ अग्निहोत्र भी वेदों की विद्या है। इसका क्षेत्र तो वेदों में सबसे ज्यादा है। हम मनुष्यों की जन्म से पूर्व गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक सब कुछ यज्ञ पर आधारित है। तो यह यज्ञ सामान्य व अवैज्ञानिक कैसे हो सकता है? अपेक्षा है कुछ व्यक्तियों की, जो अग्निहोत्र (होम) को उस पद पर पुनः आसीन कर सके। हमारा यह संकल्प होना चाहिए कि हम यू.एन.ओ. में सिद्ध कर सकें कि होम अनेक समस्याओं का समाधान है। जैसे योग दिवस है, वैसे विश्व में अग्निहोत्र (होम) दिवस व वेद (knowledge) दिवस भी होना चाहिए। यह अवश्य होगा क्योंकि यह "यूनिवर्सल साइन्स" है। इसमें आर्यों को मुख्य भूमिका निभानी चाहिए। वस्तुतः यज्ञ के दो विभाग है:

1. नित्य यज्ञ – जिसको शतपथ ब्राह्मण में इस प्रकार कहा है कि– "सूर्य वा अग्निहोत्रम्" जो सूर्य में आपतत्व (सोम) की निरन्तर आहुति द्वारा सम्पन्न हो रहा है। तथा वायु नक्षत्र अग्नि चन्द्रादि जो कार्य कर रहे हैं। ये ईश्वरीय व्यवस्था है। युनिवर्सल साइन्स है।

2. कृत्रिम यज्ञ – किन्तु सूर्य, वायु आदि दिव्य शक्तियों को श्रेष्ठतम कार्य करने हेतु मनुष्य द्वारा प्रदत्त आहुति की भी अपेक्षा है यह वार्ता वैदिक विज्ञान से सिद्ध है। जो हम अग्नि में आहुति देते हैं वह सूर्य तक जाती है तथा वर्षा आदि में सहयोगी बनती है। उस वर्षा के दिव्य जल से दिव्य अन्न (पूर्ण गुणों से युक्त) पैदा होता है, जिसे खाकर प्रजा रोग रहित रहती है। (महर्षि मनु. ३।३६)

जो अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त है उनके द्वारा हम ब्रह्माण्ड में स्थित वायु, जल आदि दूषित होकर जो प्रतिकूल बन गये हैं, उनकी प्रतिकूलता को हम "यज्ञ" द्वारा अनुकूल करते हैं। तथा सृष्टि निर्माण प्रक्रिया को यज्ञों के माध्यम से (नाट्यरूप) में बताया जाता है। जैसे सूर्य कैसे कार्य करता है? यह अग्निहोत्र द्वारा बताया जाता है।

यज्ञ के तीन प्रकार

1. आध्यात्मिक यज्ञ – शरीर में प्राण, अपान, इच्छा, धर्म, संस्कार, ध्यान, आदि जो यज्ञ हो रहा है।

2. आधिदैविक यज्ञ – सूर्य वा अग्निहोत्रम् (शतपथ) के अनुसार जो सूर्य में आपः (सोमतत्व की आहुति द्वारा जो हो रहा है।)

3. आधिदैविक यज्ञ – जो हम अग्निहोत्र आदि करते हैं तथा गर्भाशय की अग्नि में जो शुक्ररूपी सोम की आहुति द्वारा जो गर्भोत्पत्ति हो रही है। इन तीनों यज्ञों में, यदि द्रव्य गुण क्रिया व आहुति श्रेष्ठ है तो फल भी श्रेष्ठ होगा अन्यथा नहीं।

अग्निहोत्र के अन्य तीन विभाग:

1. नित्य यज्ञ – यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात्। नित्ये तु पयसा जुहोति। अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः। कात्या० श्रौत० सू० (१५।११।२५) अर्थात् – स्वर्ग प्राप्ति हेतु जीवनपर्यन्त प्रतिदिन दूध की आहुति दे।

2. काम्ययज्ञ – यदि तेज बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, वर्षा, सुख शान्ति आदि की कामना है तो काम्ययज्ञ करें।

घृतेन तेजस्कामः, कात्या० श्रौत० सू० (४।१५।३५)।

बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक तेज कामना वाला घी से करें।

तण्डुलैर्बलकामः – व्रीहितण्डुल से बल, कामना युक्त यज्ञ करे।

कारीर्या यजेत वृष्टिकामः। वर्षा की इच्छा युक्त मनुष्य करिरी इष्टि को करें आदि।

3. नैमित्तिक यज्ञ –अग्नि विद्युत पात, भूकम्प, महामारी आदि से प्राप्त हानि आदि के निवारण हेतु जो यज्ञ किया जाता है।

यज्ञ व अध्यात्म का वैज्ञानिक सम्बन्ध

अर्थ वाचः पुष्पफलमाह। याज्ञदेवते, पुष्पफले। देवताध्यात्मे वा।

निरुक्त 1/20

वेदवाणी के अर्थ को पुष्प व फल के रूप में कहा है। यज्ञ का ज्ञान पुष्प है, तथा देवता का ज्ञान फल है। वा देवताओं (अग्नि, वायु, सूर्य, आदि) का ज्ञान पुष्प है तथा अध्यात्म उसका फल है। बिना यज्ञों के प्रयोग द्वारा देवताओं के गुण क्रिया प्रभाव आदि का ठीक से ज्ञान नहीं होता। इनके ज्ञान के बिना व्यक्ति पूर्ण आध्यात्मिक नहीं हो सकता है। जैसे बुद्धि से, मन से किस देवता का संबंध है, इसको ठीक से जाने बिना इनका 100% प्रयोग नहीं होता आदि। तथा–

अजातो ह वै पुरूषो यावन्न यजतेस यज्ञेनैव जायते (शत.)

व्यक्ति यज्ञ से पैदा होता है। यदि वह यज्ञ नहीं करता तो बिना उत्पन्न हुआ है। क्योंकि यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। जो शरीर में है वही यूनिवर्स में है। शरीर स्थित इन दिव्य शक्तियों को ठीक से जाने बिना व्यक्ति आध्यात्मिक वैज्ञानिक कैसे बनेगा जी?

यज्ञ के लाभ

1. यज्ञ से मेघ बनते है और उनसे धरती पर वर्षा होती है। अथर्व–१५।५।

2. **अपामतिं दुर्मतिं बाधमाना।**
यजु०१७।५४।
यज्ञदुर्मति एवं दुर्गुणों को दूर करता है।

3. **आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो यज्ञेन कल्पताम् मनो यज्ञेन कल्पताम्।**
यजु०२२।३२।
यदि आप कम से कम 100 वर्ष तक शारीरिक, मानसिक, आत्मिक दृष्टि से स्वस्थ व प्रसन्न रहना चाहते हैं तो यज्ञ करें।

4. **अग्नि वृत्राणि जङ्घनद।**
यजु० ३३।९।

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष **15वाँ आर्य परिवार .....**

कि आर्य संस्कारों से युक्त जीवनसाथी चुनने के लिए अवसर प्रदान का आर्य समाज का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। इससे समाज को नई दिशा मिल रही है। देश के अनेक स्थान पर ऐसे सम्मेलन आयोजित किये जाने चाहिए।

इस अवसर पर आचार्य अग्निमित्र ने कहा कि समान, गुण, कर्म और स्वभाव वाले जीवन साथी से विवाह करने से समझौतावादी जीवन नहीं जीना पड़ता है। इसलिए स्वभाव को परखें, गुण को मिलायें, न कि जन्म कुण्डलियां।

– शेष पृष्ठ 8 पर

दीप प्रज्जवलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं सभा प्रधान जी का उद्बोधन

15वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी –युवतियां– युवक एवं उनके माता–पिता अपना परिचय प्रस्तुत करते हुए।

Glimpses of the Sama Veda

Continue from last issue :-

- Priyavrata Das

The Unrivalled

"No one obstructs Him in His action, and never can He be held back from performing His duties, and none can separate His duties and none can separate Him from His creation, nor can the creation destroy Him. The person who performs noble deeds and who strives to win the favour of divine powers and will, conquers those who do not worship."

"No hostile mortal can ever prevail by fraud over him, who serves the Lord well with sacred offerings."

न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्त्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा।।(Sv.243)

Na kistam karmana nasadyas cakara sadavrdham.

indram na yajnair visvagurtam rbhvasam adhrstam dhrsnum ojasa.

न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः।
यो अग्नये ददाश हव्यदातये।।(Sv.104)

Na tasya mayaya ca na ripur isita martyah.
yo agnaye dadasa havyadataye..

The Most Adorable

"O friend, do not worship anyone but Him, the most Adorable one. Praise Him alone, the radiant, the bestower of benefits. He is the revealer of spiritual wealth and the cause of all beauty, all strength and all wisdom. Our exhilarating streams of love flows on to Him when we repeatedly utter hymns in His honour."

Man makes flallter to his worldly master, he extols the physical things he enjoys. But alas, he forgets the resplendent Lord who is his only disinterested protector. Only He has bestowed on us the all-supporting life factors like the wind, water, fire as also the wonderful physical body. He extends his arms even for the protection of those beings who possess no means to pray or praise Him. He never ignores even those who have no faith in Him. He is the One Radiant that illuminating the outermost cosmos as well as the innermost recesses of our hearts, which a thousand suns would fail to do. We thank our fellowmen for petty help, but forget to offer thanks to the resplendent Lord for His endowment of the vital principles and bounties of Nature that keep our life going.

मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत।।(Sv.242)

Ma cid anyad vi samsata sakhayo ma risanyata.

indramit stota vrsanam saca sute muhur uktha ca samsata..

The Unparalleled

"There is no one, O resplendent Lord, dispeller of darkness superior to you; no one better than you; there is no one; verily, such as you are."

"O resplendent Lord, since eternity you have neither a rival nor any companion. Surely you seek company of one who loves to fight against destructive powers."

"O unparalleled Lord, possessor of unique wealth and wisdom, desirous of your protection, we weak persons invoke you who are the source of all strength for help."

न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्।
न क्येवं यथा त्वम्।।(Sv.203)

Na ki indra tvad uttaram na jyayo asti vrtrahan.

na kyevam yatha tvam..

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे।।(Sv.399)

Abhratrvyo ana tvamanapirindra janusa sanadasi. yudhedapitvamicchase..

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः।
वज्रिंचित्र हवामहे।। (Sv.408)

Vayamu tvamapurvya sthuram na kaccidbharantovasyavah.

Vajrim citram havamahe.. **To be Conti....**

प्रेरक प्रसंग — महापुरुषों की रीति

सार्वदेशिक सभा की बैठक थी। महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज प्रधान थे। पं. चमूपतिजी महाराज उठकर कुछ बोले। महात्माजी आवेश में थे। बोले–''बैठ जाओ, तुम्हें कुछ पता नहीं।''

आचार्य प्रवर पण्डित चमूपति चुपचाप बैठ गये। बैठक समाप्त हुई। महात्माजी एक ऊँचे साधक थे। उनके मन में विचार आया कि उनसे कितनी भयंकर भूल हुई है। आचार्य चमूपति सरीखे अद्वितीय मेधावी विद्वान् को यह क्या कह दिया?

महात्माजी आचार्यजी के पास गये। नम्रता से कहा, ''पण्डितजी मुझ से बड़ी भूल हुई। मैं आवेश में था। सभा-संचालन में कई बार ऐसा हो ही जाता है। मैंने आवेश में आकर कह दिया–''तुम्हें कुछ पता नहीं या तुम्हें क्या आता है।''

आचार्य प्रवर चमूपति बोले, ''ऐसी कोई बात नहीं, आपने ठीक ही कहा। आपको कहने का अधिकार है। आप हमारे ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, महात्मा व त्यागी-तपस्वी नेता हैं।''

दोनों महापुरुषों में इस प्रकार की बातचीत हुई। पाठकगण! इस घटना पर गम्भीरता से विचार करें। दोनों महापुरुषों के बड़प्पन व नम्रता से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। संगठन की सुदृढ़ता के लिए ऐसे सद्भावों का होना आवश्यक है। आचार्य चमूपतिजी ने ही 'सोम-सरोवर' ग्रन्थरत्न में लिखा है कि संशय में बिखेरने की शक्ति तो है, जोड़ने व पिरोने की नहीं। आज अहं के कारण, पद-लालसा व सन्देह के कारण कितने व्यक्ति हमारे संगठन को बिखेरने में लगे हुए हैं। आइए, जोड़ने की कला सीखें।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ -6

गतांक से आगे....

विभक्ति-विचार : पांचवें अध्याय में हमने विभक्तियों के विषय में पढ़ा था। तो आओ सबसे पहले विभक्तियों को समझते हैं। विभक्ति का शाब्दिक अर्थ है – 'विभक्त होने की क्रिया या भाव' या 'विभाग' या 'बाँट'। व्याकरण में शब्द (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण) के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न विभक्ति कहलाता है जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार नाम या संज्ञाशब्दों के बाद लगने वाले वे प्रत्यय 'विभक्ति' कहलाते हैं जो नाम या संज्ञा शब्दों को पद (वाक्य प्रयोगार्थ) बनाते हैं और कारक परिणति के द्वारा क्रिया के साथ संबंध सूचित करते हैं । प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियाँ हैं जिनमें एकवचन, द्विवचन, बहुवचन- तीन वचन होते हैं। पाणिनीय व्याकरण में इन्हें 'सुप' आदि 27 विभक्ति के रूप में गिनाया गया है। संस्कृत व्याकरण में जिसे 'विभक्ति' कहते हैं, वह वास्तव में शब्द का रूपांतरित अंग होता है। जैसे, रामेण, रामाय इत्यादि। इस क्रम में कारकों को समझ लेना उचित होगा –

कारक-विचार : 'कारक' का अर्थ है, ऐसी वस्तु जिसका क्रिया के पूरा करने में काम पड़े।

उदाहरण के लिए 'अयोध्या में रघु ने अपने हाथ से लाखों रुपये ब्राह्मणों को दान दिए' इस वाक्य में दान क्रिया के पूरा करने के लिए जिन-जिन वस्तुओं का उपयोग हुआ , वे 'कारक' कहलायेंगे। दान की क्रिया किसी स्थान पर होती है, । यहाँ 'अयोध्या' में हुई, इसलिए 'अयोध्या' कारक हुई। इस क्रिया के करने वाले रघु थे, इसलिए 'रघु' कारक हुए। यह क्रिया हाथ से पूरी की गई, इसलिए 'हाथ' कारक हुआ, 'रुपये' दिये गये, इसलिए 'रुपये' कारक हुए और ब्राह्मणों को दिए गये, इसलिए 'ब्राह्मण' कारक हुए। क्रिया के पूरा करने के लिये इस प्रकार 6 सम्बन्ध होते हैं,

क्रिया का करने वाला	– कर्ता
क्रिया का कर्म	– कर्म
क्रिया जिसके द्वारा पूरी हो	– करण
क्रिया जिसके लिए हो	– सम्प्रदान
क्रिया जिससे निकले, या अलग हो	– अपादान
क्रिया जिस स्थान पर हो	– अधिकरण

इस प्रकार कर्तृ, कर्म, करण, सम्प्रदान,अपादान और अधिकरण ये 6 कारक हुए। इन्हीं कारकों के व्यवहार में विभक्तियाँ आती है। हिन्दी में सम्बन्ध को भी एक कारक बताया जाता है। क्रिया से जिसका सीधा सम्बन्ध होता है, वही कारक कहलाता है, –गोविन्द के लड़के गोपाल को श्याम ने पीटा, – इसमें पीटना क्रिया का सीधा सम्बन्ध गोपाल (जिसको पीटा) और श्याम (जिसने पीटा) से है, गोविन्द से कुछ भी सम्बन्ध नही है, इसलिए 'गोविन्द के' को कारक नहीं कह सकते, गोविन्द का सम्बन्ध गोपाल से है, किन्तु पीटने की क्रिया के पूरा करने में उसकी (गोविन्द की) कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। विभक्ति और कारक को समझने के बाद अब हम प्रथमा विभक्ति को समझते हैं-

प्रथमा विभक्तिः- (1) संस्कृत में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग ''उद्देश्य'' (subject) दर्शाने के लिए होता है। (किन्तु यदि ऐसा कहे कि ''प्रथमा विभक्ति'' कर्ता ''की बोधक है'' तो यह विधान अपूर्ण है। ऐसा वाक्य कर्तरि प्रयोग के लिए ही है।)

सबसे पहले उद्देश्य यानी – उदाहरण के तौर पर।

''हनुमान अपने बाहुबल से औषधि का पर्वत उठाकर ला रहे हैं'' इस वाक्य में हनुमान क्या करते हैं? ऐसी जिज्ञासा के उत्तर रूप में हनुमान को उद्देश्य बनाकर ''हनुमान पर्वत लाने की क्रिया करते हैं'' इसलिए हनुमान उद्देश्य है और उद्देश्य ही प्रथमा विभक्ति में आता है।जैसे

1) कपिश्वरः पर्वतम् आनयति। (कपिश्वर = कर्ता)
2) अहम् पुस्तकं पठामि। (अहम् = कर्ता)
3) त्वं पुस्तकं पठसि। (त्वं)
4) सः पुस्तकं पठति। (सः)
5) रामः पुस्तकं पठति। (रामः)

(2) कोई भी वस्तु या व्यक्ति के नामाभिधान व्यक्त करने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। अर्थात् कोई वस्तु या व्यक्ति के विषय में यह प्रश्न आए। ''किम् इदम्?'' यह क्या है? और ''कः अहम्?'' यह कौन है? तब जो व्यक्ति या वस्तु का नाम हो वह प्रथमा विभक्ति में आएगा। जैसे –

इदम् पुष्पम्। अयम् वृक्षः। अयम् रामः। एतानि पुष्पानि।
विक्रमः पठति = विक्रम पढ़ता है/ पढ़ रहा है।
माला पचति = माला पकाती है/पका रही है।
उपाध्यायः आगच्छति = उपाध्याय आ रहा है/ रहे हैं।
कुक्कुरः शेते = कुत्ता सो रहा है।
मार्जारः पिबति = बिल्ली पी रही है।
पक्षिणः उड्डयन्ति = पक्षी उड़ रहे हैं।
अहं गच्छामि = मैं जा रहा हूं/जा रही हूं।
आवां यजावः = हम दोनों यज्ञ कर रहे हैं/कर रही हैं।
वयं उपविशामः = हम सब बैठ रहे हैं/रही हैं।
गोपालः दोग्धि = गोपाल दुह रहा है।
ग्राहकः क्रीणाति = ग्राहक खरीद रहा है।
भक्तः प्रार्थयति = भक्त प्रार्थना कर रहा है।
त्वं सत्यापयति = तू सत्य कह रहा है/रही है। ***क्रमशः***

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

गुरु विरजानन्द स्मृति भवन, करतारपुर का शिलान्यास एवं आर्य महासम्मेलन : 19 जुलाई को

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल के पास 12 करोड़ की लागत से बनने वाले गुरु विरजानंद स्मृति भवन का शिलान्यास कैबिनेट मंत्री सोहन ठंडल, विधायक सरवन सिंह फिल्लौर के कर कमलों द्वारा गुरु पूर्णिमा 19 जुलाई, 2016 को किया जाएगा। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री, विधायक के अलावा पंजाब हरियाणा के गवर्नर प्रो, कप्तान सिंह सोलंकी के भी आने की सम्भावना है। ज्ञात हो इस स्मृति भवन के लिए एक एकड़ भूमि पूर्व में अलाट हो चुकी है व भवन का स्कैच भी जारी किया जा चुका है।

गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय (गुरुकुल करतारपुर) के प्रधान श्री ध्रुव मित्तल ने बताया कि शिलान्यास वाले दिन आर्य महासम्मेलन आयोजन भी किया जाएगा जिसमें कई प्रांतों से आर्य समाज के भजनोपदेशक व वैदिक उपदेशकों के अलावा राज्य भर से 8 हजार आर्य समाज के महानुभाव भाग लेंगे।

- डॉ. उदयन आर्य, प्राचार्य

नि:शुल्क आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

बंगाल के विशिष्ठ आर्य समाजों (आर्य समाज कलकत्ता, बड़ा बाजार, हावड़ा, भवानीपुर तथा आसनसोल) के सम्मिलित प्रयास से 29 मई से 5 जून 2016 के मध्य आर्य समाज कलकत्ता में पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति की स्मृति में द्वितीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के उद्घाटन में पं. ज्वलंत कुमार शास्त्री और आचार्य हरि प्रसाद शास्त्री ने पुरोहित की परिभाषा, कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला। शिविरार्थियों द्वारा 'मूर्ख शिक्षक एवं श्राद्ध' नामक संस्कृत व बंगला नाटिका प्रस्तुत की।

समापन समारोह की अध्यक्षता पूर्व प्रधान श्री मनीराम आर्य ने की। अतिथि के रूप में श्री प्रमोद अग्रवाल, श्रीमती सुषमा गोयल, डॉ. अजय आर्य, समाज सेवी श्री गोपाल झुनझुनवाला, श्री जगमोहन बागला एवं श्री ओम प्रकाश मस्करा उपस्थित रहे। शिविरार्थियों को अनेक शिक्षाविदों द्वारा प्रशिक्षित किया गया व उन्हें वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया। श्री आनन्द गुप्त ने भोजन व आवास प्रबन्ध तथा पं. सतीश चन्द मंडल के बौद्धिक प्रबन्धन से शिविर अभूतभूर्व रहा।

-पं. वेद प्रकाश शास्त्री, संयोजक

चतुर्वेद शतकम महायज्ञ

वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक में 15 से 17 जुलाई, 2016 तक गुरु पूर्णिमा के अवसर पर चतुर्वेद शतकम महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य सोमदेव जी (अजमेर) के प्रवचन होंगे। वेद पाठ कन्या गुरुकुल भुसावर (राजस्थान) की कन्याएं करेंगी।

- वेद प्रकाश आर्य, महामन्त्री

आप भी अपने शहर, जिले में प्रारम्भ करें 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' योजना

इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए जिन्हें आज देवताओं के रूप में पूजा जाता है जैसे श्री राम, श्री कृष्ण उन सभी ने सिद्धि प्राप्ति हेतु महायज्ञ किये। यहां तक कि आदि शक्ति शिव के काल में भी पूजा-पाठ में यज्ञ ही प्रधान माने जाते थे ऋषियों-मुनियों के गुरुकुलों में प्रात: काल शिष्यों को गुरु द्वारा यज्ञ कराया जाता है। लेकिन समय परिवर्तन व पाखंडियों द्वारा यज्ञ परम्परा को शनै: शनै: दबाया जाने लगा। केवल आर्य समाज ने इस परम्परा को निरंतर कायम रखा और आज भी इस परम्परा को घर-घर पहुंचाने का बीड़ा उठाया हुआ है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में एक ऐसी योजना चला रही है जिसके माध्यम से श्री सत्य प्रकाश जी घर-घर जाकर नि:शुल्क यज्ञ कराते हैं। साथ ही यजमान को कुछ उपहार भेंट स्वरूप देते हैं। यज्ञ पर होने वाला समस्त व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा स्वयं वहन करती है। क्यों न आप भी अपने जिले, राज्य, शहर में इस प्रकार की (घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ) योजना अपने आर्य समाज के माध्यम से प्रारम्भ करें और यज्ञ की परम्परा को आगे बढ़ाने में अपनी भागीदारी निभाएं। विस्तृत जानकारी के लिए श्री सत्य प्रकाश जी मो. 09650183335 पर सम्पर्क करें।

प्रेरक कथा

निर्णय

पिछले दिनों एक मित्र मिले। बुजुर्ग हैं। उनकी तीन पुत्रियां हैं। तीनों ही खूब पढ़-लिखकर अच्छी नौकरियां पा चुकी हैं। तीनों की ही शादियां भी हो चुकी हैं। छोटी बेटी की शादी अभी हाल ही में हुई थी। मित्र ने बतलाया कि उनकी छोटी बेटी बहुत ही ज़हीन है लेकिन है पूर्णत: शाकाहारी। शादी के बाद जब वह ससुराल गई तो बहुत खुश थी। शादी के एक सप्ताह बाद जब घर में सामिष भोजन पकने लगा तो उसकी तो हालत ही खराब हो गई। उसने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसके जीवन में कभी ऐसा भी हो सकता है। करे तो क्या करे? सब लोग डिनर पर बैठे। जैसे ही भोजन प्रारम्भ हुआ वह भागकर वॉशबेसिन की तरफ गई और उल्टी कर दी। किसी ने इसे खुशखबरी समझा तो किसी ने कुछ और। कई तरह की प्रतिक्रियाएं हुई। पुत्रवधु जब कुल्ला आदि करके वापस डाईनिंग टेबल पर लौटी तो ससुर ने पूछा, ''बेटी तबीयत ठीक तो है?'' पुत्रवधू की आँखों में आँसू आ गए और वह डरते-डरते धीमी सी आवाज में बोली, ''पापाजी मैं नॉनवेज बर्दाश्त नहीं कर सकती।'' तब तो तुम्हारा इस घर में रहना मुश्किल होगा।

ससुर ने पुत्रवधू की तरफ ध्यान से देखते हुए कहा। पुत्रवधू को अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकती हुई सी मालूम हो रही थी। उसकी सिसकियों में तेजी आ गई। पूरा माहौल असहज हो गया।

ससुर ने परिवार के सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा, 'देखो भई न चाहते हुए भी मुझे एक कठोर निर्णय लेना होगा और आज ही अभी लेना होगा। देर करने का कोई फ़ायदा नहीं। यह लड़की जितनी जल्दी मुक्त हो जाए उतना ही अच्छा है।'' पुत्रवधू अन्दर तक काँप उठी। उसने सभी की ओर कातर दृष्टि से देखा। ससुर ने अत्यंत गम्भीर होकर अपना फैसला सुनाते हुए कहा, 'मुझे बहुत अफ़सोस है कि हमारे परिवार की खानपान की आदतों की वजह से हमारी पुत्रवधू सामंजस्य नहीं बिठा पाएगी। अत: मैंने यह निर्णय लिया है कि आज से इस घर में सामिष भोजन न तो पकेगा और न बाहर से ही लाया जाएगा। मेरा एक सुझाव ये भी है कि आज से हमारा पूरा परिवार ही पूरी तरह से शाकाहारी बनने का प्रयास करे।' सभी ने ताली बजाकर उनकी बातों का समर्थन किया। पुत्रवधू की आँखों में पुन: आँसुओं की झड़ी लग गई लेकिन ये आसूँ बेबसी की पीड़ा के न होकर स्नेह और अपनत्व के आनन्द के थे। दूसरे लोग हमारे लिए नहीं, हम दूसरों के लिए क्या त्याग कर सकते हैं। यही महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय है।

- सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली-34

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रधान - कर्नल रविन्द्र कुमार वर्मा
मन्त्री - श्री दयानन्द यादव
कोषाध्यक्ष - श्री विजय दीक्षित

आर्य समाज मन्दिर हडसन लाईन, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-09

प्रधान - श्री मनमोहन सिंह
मन्त्री - श्री दविन्दर कुमार
कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुरेश अरोड़ा

आर्य समाज कोसी कलॉ, उ.प्र.

प्रधान - विजय कुमार गोयल
मन्त्री - नन्द किशोर शास्त्री
कोषाध्यक्ष - सत्य प्रकाश आर्य

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र आर्य का निधन

आर्य समाज अमरोहा के मुख्य स्तम्भ, श्री राम गोपाल शालवाले, पं. प्रकाश वीर शास्त्री, श्री ओम प्रकाश पुरुषार्थी के अभिन्न सहयोगी 85 वर्षीय श्री वीरेन्द्र आर्य जी का लम्बी बीमारी के उपरान्त निधन हो गया। वे सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य भी रहे। आपने युवावस्था में आर्य वीर दल की स्थापना की थी। आचार्य कृपलानी के चुनाव काल में आप अमरोहा के पर्यवेक्षक रहे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

यज्ञाग्नि प्रदूषण को दूर करता है।

5. भेषज्य यज्ञा वा एते यच्चातुर्मास्यानि। कौ०ब्रा०. ५/१।

यज्ञाग्नि से अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं।

शंका - क्या यज्ञ करने से कुछ जीवहत्या होती है उसका पाप लगता है क्या?

उत्तर : यूनिवर्सल साइन्स (यज्ञ) विशेषज्ञ महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (शतपथ)। सभी प्रशस्त कर्मों में अति श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। वेदों में सभी यज्ञों के नाम के साथ-साथ फल आदि से सम्बंधित हजारों मंत्र हैं। यज्ञ तो पूरे यूनिवर्स का कल्याण करता है चेतन-अचेतन, निकट-दूर, मित्र-शत्रु, पशु-मनुष्य, पेड़-पौधे, पांच तत्व, शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा सभी को कुछ न कुछ लाभ देता है। जिसका करना धर्म है उससे पाप कैसे लग सकता है? यज्ञ का दूसरा नाम अध्वर है। अर्थात् जहां हिंसा नहीं होती है।

हाँ! द्रव्य, गुण, क्रिया साधनों की श्रेष्ठता के साथ-साथ सावधानी तथा काल आदि का भी ध्यान रखना अति आवश्यक है। क्योंकि ये पदार्थ विज्ञान हैं। पदार्थ विज्ञान का सम्बन्ध गुणों के साथ काल से भी होता है। इसलिए सूर्योदय+सूर्यास्त समय में अग्निहोत्र के विशेष लाभ है। फोटोसिन्थेसिस क्रिया के कारण आदि।

पुनरपि कोई कहें नहीं जी, कुछ तो पाप लगता होगा जी, कुछ तो जीवाणु मरते होंगे जी।

तो उत्तर है इसका पुण्य फल इतना ज्यादा है। कि पाप इस दृष्टि से नगण्य है।

यज्ञ का सार

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राहमीयं क्रियते तनु। (मनु०)

अग्निहोत्र तथा सोमयाग आदि के द्वारा शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा आदि को ईश्वरीय बनाया जाता है।

पुराकाले भारतस्य विज्ञाने शिल्पकलायां शल्यचिकित्साया माध्यात्मिक तत्वविवेचने या महती ख्यातिरासीत् तस्य कारणं यज्ञ एव खलु।

भगवान् कृष्ण ने यज्ञ सार इस प्रकार कहा है-

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु व:।परस्परं भावयन्त श्रेय: परमवारस्यथ:।

अर्थ: आप देवताओं को आहुति द्वारा सम्मान दो, वे देवता आपको वर्षा, अन्न, स्वास्थ्य, सुख, शांति आदि प्रदान करें। इस प्रकार एक दूसरे के प्रति भावना रखते हुए महान कल्याण को प्राप्त करें। इस प्रकार यह वार्ता सिद्ध है कि हवन यूनिवर्सल साइन्स व यूनिवर्सल समाधान है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 जुलाई से रविवार 10 जुलाई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7 जुलाई/ 8 जुलाई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 जुलाई, 2016

पृष्ठ 5 का शेष

15वाँ आर्य परिवार विवाह योग्य .....

कार्यक्रम में सम्मेलन के दिल्ली संयोजक एस.पी. सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि जातिगत बंधन तोड़कर अपने पुत्र एवं पुत्रियों का विवाह कराने का सर्वोत्तम मंच यह आर्य परिचय सम्मेलन है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सर्वश्री विनय आर्य, रमेश शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री, अर्जुनदेव चढ्डा, एस.पी. सिंह, शिव कुमार मदान, सुखवीर सिंह आर्य, सतीश चढ्डा ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

आर्यसमाज जनकपुरी के प्रधान विक्रम नरूला ने आगन्तुक आतिथियों एवं उपस्थित युवक-युवतियो एवं उनके अभिभावकों का आर्यसमाज की ओर से स्वागत किया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्डा ने सभी अतिथियों का राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

परिचय सम्मेलन का संचालन राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्डा, दिल्ली के संयोजक एस.पी. सिंह, महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीना आर्या ने संयुक्त रूप से किया।

युवक एवं युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया तथा कैसा जीवन साथी चाहिए इसकी भी चर्चा की।

परिवारों को आपस में मिलवाने के लिए एक मेल-मिलाप समिति बनाई गई जिसके माध्यम से कार्यक्रम स्थल पर ही लगभग 23 परिवारों ने आपसी बातचीत कर रिश्तों की बात को आगे बढ़ाया।

कार्यक्रम स्थल पर आगन्तुकों की सुविधा के लिए कई पूछताछ, रजिस्ट्रेशन, विवरणिका वितरण, बैज वितरण के स्टाल लगाये गये कु. हविषा आर्या, हर्षप्रिय आर्य, मनोज नेगी, संदीप आर्य, पं. श्योराज वशिष्ठ बखूबी संभाल रहे थे।

इस अवसर पर तत्काल रजिस्ट्रेशन हेतु विशेष काउन्टर लगाया गया था। जहां प्रात: से ही रजिस्ट्रेशन कराने वालों की लाईन लगी हुई थी। सम्मेलन में युवक अपने लिए दुल्हन एवं युवतियां दूल्हा ढूंढते नजर आये। वहीं अभिभावक योग्य बहू और दामाद को तलाश रहे थे।

आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी की ओर से सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी आगन्तुकों के लिए आवास, नाश्ता एवं भोजन की व्यवस्था की गई थी।

परिचय सम्मेलन में पहुंचे आर्य परिवारों से भरा हॉल

प्रतिष्ठा में,

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए 'आर्य सन्देश' में एक नय स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** प्रारम्भ किया गया है।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिख भेजिए हमारा पता है- 'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। *-सम्पादक*

स्वास्थ्य चर्चा

नजला जुकाम से बचाव

बरसात के मौसम में सर्दगर्म से नजला जुकाम होना कोई बड़ी बात नहीं। इसे दूर करने के लिए देखते हैं कुछ घरेलू उपचार -1. दालचीनी 3 ग्राम को पानी 125 ग्राम में उबालें। आधा रहने पर छान कर निवाया पीयें। प्रात: सायं प्रयोग करें।

2. गेहूं की बूर 10 ग्राम काली मिर्च 7, नमक थोड़ा सा को 125 ग्राम पानी में उबालें आधा रह जाने पर छान कर प्रात: सायं प्रयोग करें।

3. उपलों की छनी राख आंखड़े के दूध में भिगोकर सुखा लें फिर इसकी नाक में नसवार लें। नजला ठीक हो जाएगा।

4.गुल बनफशा 6 ग्राम को 125 ग्राम पानी में उबालें आधा रहने पर छान कर निवाया पीयें। प्रात: सायं प्रयोग करें।

5. शर्बत बनफशा तीन चम्मच आधा कम निवाये पानी में डालकर रात को सोते समय लें।

6. गुल बनफशा अर्क आधा कप पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें।

7. अदरक सत्व एक-एक ग्राम पानी से प्रात: सायं लें।

8. मैथी, अलसी 5-5 ग्राम पानी 200 ग्राम में डालकर उबालें। एक चौथाई रह जाने पर छान कर कम गर्म पीयें। इस दवा को पीने से 3 घंटे पहले व 3 घंटे बाद तक कुछ नहीं खायें-पियें।

9. शर्बत खसखस 2 चम्मच एक कप पानी में मिलाकर प्रात:सायं पीयें, नजला ठीक होगा।

10. कश्मीरी पत्ता, रीठा का छिलका, धनिया 10-10 ग्राम पीसकर इसकी नाक में हुलास सूंघें।

11. रोगन गुल 10 ग्राम में कपूर चूरा एक ग्राम मिलाकर घोंटै फिर इसकी दो-दो बूंद नाक में डालकर ऊपर को खीचें। 3-4 दिन लगातार करें। इससे नाक की बदबू दूर होगी।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह